University in News on 12 November 2020

i-NEXT PAGE 2

म्यूजियम में आप भी देख सकेंगे उल्का पिंड

PICS: DAINIK JAGRAN-I NEXT

400 करोड़ साल पुराना बिच्छू का जीवाश्म

जमुनिया पत्थर.

मेमल हाथी का दांत.

शताब्दी वर्ष में आम लोगों के लिए खोला जाएगा एलयू के भूगर्भ विभाग का म्यूजियम

लोग देख सकेंगे 400 करोड़ साल पुराने बिच्छू व 70 करोड़ साल पुराने शार्क के दांत

lucknow@inext.co.in

LUCKNOW (11 Nov): नवपाषाण काल में आदिवासी अपने हथियार किस पत्थर से बनाते थे या चांदी, तांबा, एल्मुनियम और लोहा किस मिनरल से निकला जाता है या फिर जमुनिया और नीलम जैसे बहुमूल्य पत्थर कैसे हासिल किए जाते हैं. इन चीजों की जानकारी आप को लखनऊ यूनिवर्सिटी के भूगर्भ शास्त्र विभाग के म्यूजियम में मिल जाएगी. यही नहीं यहां म्यूजियम में आप उल्का पिंड की झलक भी हासिल करेंगे.

20 से 25 तक खुलेगा म्यूजियम

भूगर्भ विभाग के एचओडी प्रो. अजय मिश्रा ने बताया कि वीसी प्रो. आलोक कुमार राय के निर्देश पर शताब्दी वर्ष समारोह में विभाग का म्यूजियम 20 नवंबर से 25 नवंबर तक रोज सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक स्कूली बच्चों और आम लोगों के लिए खोला जाएगा. इसका उद्घाटन 20 नवंबर सुबह 9.30 पर होगा.

उल्का पिंड देखने का मौका

डीन डॉ. अजय आर्या ने म्यूजियम की जानकारी देते हुए बताया कि यहां रखा हुआ उल्का पिंड का टुकड़ा अमेरिका के टेक्ससा यूनिवर्सिटी और आस्ट्रेलिया के एडीलेड यूनिवर्सिटी से उपहार में मिला है. इस टुकड़े पर गड्ढे के निशान होते हैं, इसका 99 फीसदी हिस्सा लोहा होता है. उन्होंने इकोनॉमिक मिनरल की चर्चा करते हुए बताया कि हर धातु का अपना मिनरल होता है. यह सभी और मिनरल भी म्यूजियम में दिखेंगे.

70 करोड़ साल पुराने शार्क का जीवाश्म

70 करोड़ साल पुराने शार्क का भी रखा है जीवाश्म

भूगर्भ विभाग के डॉ. अजय आर्या ने बताया कि इस म्यूजियम में रखे बिच्छु का जीवाश्म करीब 400 करोड़ वर्ष पुराना है. वहीं शार्क मछली के दांत भी करीब 70 करोड़ वर्ष पुराने हैं. यहां पर आपको बैरिल पत्थर भी देखने को मिलेगा. जिसे तराशकर पन्ना निकाला जाता है. वहीं अग्नियशैलों के अंदर पाए जाने वाले पत्थर से जमुनिया रत्न निकाले जाते हैं. यहां श्राम क्रिस्टल भी नजर आएगा, जिससे स्फटिक बनाया जाता है. डॉ. अजय ने गोडवाना काल के पादप जीवाश्म को दिखाया. इसी काल में कोयले का निर्माण हुआ था. उन्होंने एक मेज पर रखे हुए काले रंग की ओर इशारा करते हुए बताया कि इन्ही पत्थरों से नवपाषाण युग में आदिवासी अपने हथियार बनाया करते थे. इसमें तीर, चाकू और अन्य धारदार हथियार शामिल थे. ये पत्थर जबलपुर में नर्मदा के किनारे मिले है.

JAGRAN CITY PAGE I

राजनीतिक संक्रमण काल भोगने के बाद फिर उन्नति पथ पर लविवि

ऋषि मिश्र

1980 से साल 2005 तक लखनऊ में छात्रसंघ के नाम पर सियासी हस्तक्षेप ने खराब किया माहौल, मुख्यमंत्री कार्यालय से संभाली जाती थी एलयू की छात्र राजनीति की बागडोर, मगर अब बदले हालात

90 के दशक में लखनऊ विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रत्याशियों के बीच मतगणना में कांटे की टक्कर थी। हालात ये हो गए कि कभी मतगणना में दोनों के बीच टाई हो जाता, तो कभी एक दो वोटों के अंतर से हार-जीत हो जाती थी। कानून व्यवस्था की स्थिति बुरी तरह से बिगड़ने लगी थी। उस वक्त के गवाह रहे लोग बताते हैं कि इस संबंध में निर्णय करने के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय तक का हस्तक्षेप हुआ था। इसके बाद मनोज तिवारी को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया था। बाद में मनोज तिवारी कुछ तकनीकी कारणों से अयोग्य घोषित कर दिए गए थे। 1980 से 2005 का काल लखनऊ विश्वविद्यालय के लिए राजनीतिक संक्रमण का समय रहा, जब छात्र राजनीति में सियासी दलों का पूरा प्रभाव हो गया था। लखनऊ विश्वविद्यालय की राजनीति मुख्यमंत्री आवास से संचालित की जाती थी, जिसका परिणाम यह हुआ कि इन 25 सालों में सुनहरे अतीत को विश्वविद्यालय ने खोया और बदनामी का ठीकरा फूटा। धीरे-धीरे बदलाव हुए अब एक बार फिर से कुछ कमियों के बावजूद सुधार हो रहे हैं। परिसर बदल रहा है।

एलयू में राजनीति का माहौल हमेशा से ही रहा। यहां से बड़े-बड़े नाम भी निकले। पूर्व राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा भी यहां के छात्रसंघ का हिस्सा रहे। वर्तमान में मंत्री ब्रजेश पाठक भी पूर्व अध्यक्ष रहे। इसी तरह से अरविंद सिंह गोप, शारदा प्रताप शुक्ल और ऐसे ही न जाने कितने ही नाम एलयू के छात्रसंघ से जुड़े रहे।

1953 में केजीएमयू के छात्र को गोली लगने से हुई मौत के बाद आंदोलन हुआ था। 1960 मनोविज्ञान विभाग के एक प्रोफेसर पर छात्रा के उत्पीड़न का आरोप 1960 में लगा था। तब पहला बड़ा आंदोलन हुआ था। 1980 के बाद सियासी दलों ने एलयू के छात्रसंघों की बागडोर सीधे अपने हाथ में ले ली। इसका नतीजा ये हुआ कि मुख्यमंत्री कार्यालय से अनुशासनहीन छात्रों को शह मिलने लगी। एलयू का माहौल खराब हुआ। ये दौर हाईकोर्ट के छात्रसंघ चुनाव पर रोक लगने तक जारी रहा। 2005 आते-आते राजनीतिक माहौल शांत हो गया। एक बार फिर से विश्वविद्यालय में पढ़ाई का वातावरण बनने लगा। लविवि के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि हम लिंगदोह कमेटी की सिफारिशों के आधार पर न्यायालय का आदेश मिलते ही चुनाव करवा देंगे, मगर सियासी दलों का बहुत हस्तक्षेप छात्रसंघों के लिए गलत है। हमने अपने परिसर में किसी भी तरह की राजनीतिक होर्डिंग लगाने पर रोक लगाई है। नगर निगम को बाकी शहर में भी कार्रवाई करनी चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय फलक पर चमके सितारे

लखनऊ को बनाया कर्मभूमि

• जितेंद्र उपाध्याय

कभी लखनऊ विश्वविद्यालय के अधीन रहे किंग जॉर्ज चिकित्सा विवि में पढ़ने वाले विद्यार्थी डॉक्टर बनकर आज भी लविवि के नाम पर गर्व करते हैं। अपनी योग्यता को धार देने के लिए विदेशों में भले पढ़ाई की हो, लेकिन राजधानी को कर्मभूमि बनाकर बीमारों का इलाज कर रहे हैं। लखनऊ विवि के अधीन रहे किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस और एमएस की पढ़ाई की और यूरोलॉजी में महारत हासिल कर डॉ.सलिल टंडन विज्ञान रत्न बन गए।

एंड्रोलॉजी में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए कई बार विदेश जा चुके डॉ.टंडन रेलवे अस्पताल में तैनात हैं। उनका कहना है कि मेरे पिता प्रो.जीएस टंडन मेरे पहले गुरु थे। उन्होंने ही मेरे अंदर सेवा का भाव जगाने का काम किया। मेरे गुरु प्रो. दिवाकर दलेला और प्रो.केएम सिंह के सानिध्य में मैंने जो कुछ भी सीखा वह मुझे आज भी आगे बढ़ने की ताकत दे रहा है। उनका मानना है कि गुरु-शिष्य परंपरा की सीख जो पहले मिलती थी, उसके मुकाबले थोड़ी कमी आई है, लेकिन परंपरा अभी भी कायम है।

डॉ. सलिल टंडन

02 दशक में ऐसे पहले डॉक्टर हैं सलिल टंडन, जिनके पास यूरोलॉजी में डबल एफआरसीएस की डिग्री है

डॉ.सलिल दो दशक में ऐसे पहले चिकित्सक हैं जिनके पास यूरोलॉजी में डबल एफआरसीएस की डिग्री है। फेलो ऑफ रॉयल कॉलेज ऑफ सर्जन की यह डिग्री चिकित्सकों के लिए काफी मायने रखती है। 2500 से अधिक सफल सर्जरी करने वाले डॉ.टंडन को 2016 में सरकार ने विज्ञान रत्न से सम्मानित किया। बेगम हजरत महल और अमृतलाल नागर अवार्ड देकर उनकी प्रतिभा को शहर ने सम्मान दिया। एंड्रोलॉजी के क्षेत्र में विशेषज्ञता के साथ ही वह छत्रपति साहू जी महाराज चिकित्सा विवि में एंड्रोलॉजी का विभाग खुलने का सपना संजोए हुए हैं। कई नामी अस्पतालों में काम करने वाले डॉ. सलिल को लखनऊ विवि ने वर्ष 2018 में विशेषज्ञता के लिए उत्कृष्ट पूर्व छात्र का अवार्ड दिया था।

VoL PAGE 3

स्टूडेंट डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन

लखनऊ। लविवि के इंजीनियरिंग संकाय और जयपुरिया प्रबंध संस्थान लखनऊ के सहयोग से क्लाउड कंप्यूटिंग एंड वर्ल्ड ऑफ बिजनेस विषय पर स्टूडेंट डेवलपमेंट प्रोग्राम का आयोजन बीटेक छात्रों के लिए किया गया। इस डेवलपमेंट प्रोग्राम में एक्सपर्ट डॉ प्रीतम सुमन ने बताया कि क्लाउड कंप्यूटिंग के तहत यूजर ऑनलाइन कार्यों का संपादन करने के लिए सुदूर स्थित डेटा सेंटर की सूचनाओं को प्रयोग करता है, जिसे क्लाउड कहते हैं। उदाहरण के तौर पर ऑनलाइन वीडियो या फोटो एडिटिंग सॉफ्टवेयर, एंटी वायरस एप्लीकेशन, ऑनलाइन फाइल कनवर्टर, ई-कॉमर्स एप्लीकेशन, डेटा बैकअप और रिकवरी आदि क्लाउड कंप्यूटिंग के तहत कार्य करते हैं।

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

प्रो. राम मिलन बनाए गए चेयरमैन

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रो. राम मिलन को एथलेटिक्स एसोसिएशन का चेयरमैन नियुक्त किया गया है। वह अगले तीन साल तक इस पद पर रहेंगे। लविवि कुलसचिव डॉ. विनोद कुमार सिंह ने इसका आदेश जारी किया। यह पद डॉ. नीरज जैन के सेवानिवृत्त होने से खाली हुआ है।

RASHTRIYA SAHARA PAGE 5

राममिलन बने लविवि एथलेटिक एसो. के चेयरमैन

लखनऊ। कॉमर्स डिपार्टमेंट मे शिक्षक राममिलन को लखनऊ विश्वविद्यालय एथलेटिक एसोसिएशन का नया चेयरमैन बनाया गया है। इसके पहले यह जिम्मेदारी लूटा के अध्यक्ष डा. नीरज जैन को मिली थी। छह नवंबर को विश्वविद्यालय से डा. नीरज जैन के रिटायर होने के बाद यह पद खाली था, जिसके बाद राममिलन की इस पर नियुक्ति की गई है।